LOOK n LEARN

जैन ऐज्युकेशन बोर्ड प्रस्तुति

आर्य स्थूलभद्र

Rs. 20.00

Vol 25

युवा हृदय सम्राट पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनिजी म.सा. की प्रेरणा...

अर्हम युवा ग्रुप

ARHAM YUVA GROUP

पस्ती द्वारा परोपकार के कार्य...

एक नया प्रयोग...

ARHAM YUVA GROUP

करुणा के सागर पूज्य गुरुदेव... जिनके हृदय में दूसरों के हित, श्रेय और कल्याण की भावना रही है... उनके चिंतन से एक अभिनव विचार का सृजन हुआ और उन्होने मानवसेवा, जीवदया के कार्य के साथ अध्यात्म साधना करने के लिए "अर्हम युवा ग्रुप" की स्थापना की..!

पूज्य गुरुदेव के प्यार से प्रेरणा पाकर यह महा अभियान समस्त मुंबई के युवक-युवतीओं का एक मिशन बन गया! इस महा अभियान में प्रतिदिन स्वेच्छा से नये नये युवक युवंतियाँ जुडते जा रहे हैं। यह उत्साही युवावर्ग हर माह हजारों किलो की पस्ती एकत्र करके उसका विक्रय करता है और उस राशी से परोपकार के कार्य करता है ।

पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन और निर्देशन के अनुसार ये युवक-युवतीयाँ हर माह के प्रथम रविवार को पार्टी, पिक्चर या प्रमाद करने के स्थान पर परमात्मा पार्श्वनाथ की जप साधना करके मनकी शांति और समाधि प्राप्त करते हैं।

दूसरे रविवार को सेवा का कार्य करने के लिए घर-घर जाकर अखबारों की पस्ती इकठ्ठी करते हैं और कड़वे-मीठे अनुभव द्वारा अपने अहम् को चूर कर, Ego को Go कर, सहनशील और विनम्र बनते हैं ।

तीसरे रविवार को पस्ती से पाये गये रूपयो से गरीब, आदिवासी, बीमार, अपंग, अंधे, वृद्ध आदि की जरूरत पूरी करते है । वे उन्हें केवल वस्तुयें या अनाज, दवा आदि ही नहीं देते अपितु उन्हें प्यार, सांत्वना आश्वासन और आदर भी देते हैं । उनकी दर्दभरी बातें सुनते हैं, अनाथ बच्चों के साथ खेलते हैं और वृद्धजनों को व्हीलचेर पर बैठाकर उनकी इच्छानुसार प्रभु दर्शन आदि कराने भी ले जाते हैं । वे कत्लखाने जाते हुए पशुओं को बचाते हैं । बीमार, घायल पशु-पक्षीयों का इलाज भी कराते हैं ।

बदले में उन्हें क्या मिलता है ? उन्हें एक प्रकार का आत्मसंतोष प्राप्त होता है । वे जो अनुभव करते हैं उसके लिए कोइ शब्द ही नही है । उनका दिल अनुकंपा से भर उठता है।

इन युवाओं ने आजतक दुनिया के सिक्के का सिर्फ एक ही पहलू-सुख ही देखा था । अब सिक्के का दूसरा पहलू दुनिया का दुःख, वास्तविकता देखने के बाद उन्हें अपना सुख अनंत गुना बड़ा लगने लगा है ।

बस ! पूज्य गुरुदेव ने आज की युवा पीढ़ी को शब्दों द्वारा समझाने के बदले प्रयोग द्वारा उनका जीवन परिवर्तन कर दिया । प्रयोग और प्रत्यक्ष देखने और अनुभूति करने के बाद समझाने की जरूरत ही नहीं रही।

चौथे रविवार को अपने पूज्य गुरुदेव के दर्शन करके, उनके सानिध्यमें उनके शुक्ल परमाणुओं द्वारा अपनी ओरा, अपने भाव और अपने विचारों को शुद्ध करके शांतिपूर्ण, निर्विघ्न अपने सारे कार्य सफल करतें हैं और नया मार्गदर्शन... नया बोध... नये विचार पाकर अपना जीवन धन्य बनाते हैं ।

आप भी जीवन में 'गुरु' द्वारा प्रेरणा पाकर परोपकार के इस महा अभियान में अपना सहयोग देवें और अपना अमूल्य मानवं जीवन सफल बनायें।

अर्हम ग्रुप के सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें -

Ritesh - 9869257089, Chetan - 9821106360, Jai - 9820155598

हमारा संदेश...

ज्ञान... ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है ।

बच्चों के लिए ज्ञान प्राप्ति का सरल माध्यम है आकर्षक और रंगीन चित्र... बच्चे जो देखते हैं वही उनके मानस मे अंकित हो जाता है और लम्बे अर्से तक याद भी रहता है ।

दूसरी बात... आज के Fast युग में बच्चों के पास पढ़ाई के अलावा इतनी साईड एक्टीवीटी है कि उन्हें लम्बी कहानियाँ और बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ने का समय ही नहीं है ।

हमारे जैनधर्म मे... भगवान महावीर के आगमशास्त्रो में ज्ञान का विशाल भंडार भरा हुआ है । ज्ञाताधर्मकथा सूत्र जैसे आगम में कथानक के रूप में भी कहानियों का खजाना है ।

बाल मनोविज्ञान की जानकारी से हमे ज्ञात हुआ कि बच्चों की रूचि Comics में ज्यादा है । उन्हें पंचतंत्र, रीचीरीच, आर्ची, Tinkle आदि Comics ज्यादा पसंद है और उसे वे दो-चार - पाँच बार भी पढ़ते है और Comics एक ऐसा Addiction है जिसे बड़े भी एक बार अवश्य पढ़ते है । यही विषय पर चिंतन-मनन करते हुए हमारे मानस में भी एक विचार आया... क्यों न हम भी जैनधर्म के ज्ञान को... हमारे भगवान महावीर के जीवन को, हमारे तीर्थंकर को... बच्चों तक पहुँचाने के लिए Comics Book का माध्यम पसंद करे...?

शायद यही माध्यम से बच्चों और बच्चों के साथ बड़े भी जैनधर्म के ज्ञान-विज्ञान की जानकारी पाकर अपने आप में कुछ परिवर्तन लायेंगे ।

परमात्मा के विशाल ज्ञान सागर में से यदि हम कुछ बूंदे भी लोगों तक पहुँचाने में सफल हुए तो हमारा यह प्रयास यथार्थ है ।

जैनधर्म की क्षमा, वीरता, साहस, मैत्री, वैराग्य, बुद्धि, चातुर्य आदि विषयों की शिक्षाप्रद कहानियाँ भावनात्मक रंगीन चित्रों के माध्यम द्वारा प्रकाशित करने का सदभाग्य ही हमारी प्रसन्नता है ।

यह Comics हमारे Jain Education Board - Look n Learn के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है ।

प्रस्तावना

भगवान महावीर की पाट परम्परा में आठवें पट्टधर आर्य स्थूलभद्र एक महायोगी के नाम से प्रसिद्ध हैं। वे अन्तिम श्रुत केवली और दशपूर्वधर आचार्य थे।

जैन इतिहास के अनुसार कोणिक पुत्र उदायी की मृत्यु के पश्चात् मगध पर नन्द वंश का अधिकार हो गया। मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी। नंदवंशीय राजाओं ने 'कल्पक' नामक विद्वान ब्राह्मण को महामात्य पद पर नियुक्त किया। इसी नंदवंश के नवम राजा धननन्द के समय कल्पकवंशीय नवम पुरुष 'शकडाल' महामात्य पद पर आसीन थे।

शकडाल अत्यन्त विद्वान, राजनीतिज्ञ, शिक्षा विशारद और कुशल अर्थ तंत्री थे। शकडाल के घर में **विक्रम संवत् 354 पूर्व में आर्य स्थूलभद्र का जन्म हुआ।** इनका एक भाई श्रीयक और सात बहने थीं। आर्य स्थूलभद्र अत्यन्त प्रखर मेधावी, धीर-गंभीर, विनम्र थे। अद्भुत काम विजेता के रूप में उनकी अमर कीर्ति आज भी जीवित है। मौर्य साम्राज्य का महामंत्री चाणक्य उनका बाल सखा और सहपाठी था। मगध की प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली की वंशजा राजनर्तकी रूपकोशा उनके गुणों पर मुग्ध होकर उनके प्रति समर्पित हो चुकी थी। 12 वर्ष तक वे रूपकोशा के रूप माधुर्य के प्रेमी रहे, परन्तु अचानक आये परिवर्तन ने तीस वर्ष की भरी जवानी में संसार से विरक्त कर दिया और वे आर्य संभूति के शिष्य बन गये। वे 30 वर्ष तक मुनि जीवन में रहे। फिर 45 वर्ष तक कुशलता पूर्वक आचार्य पद का दायित्व वहन किया।

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान

मूल्य : २०/- रु.

LOOK n LEARN
Jain Education Board
PARASDHAM
Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E),
Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

आर्य स्थूलभद्र

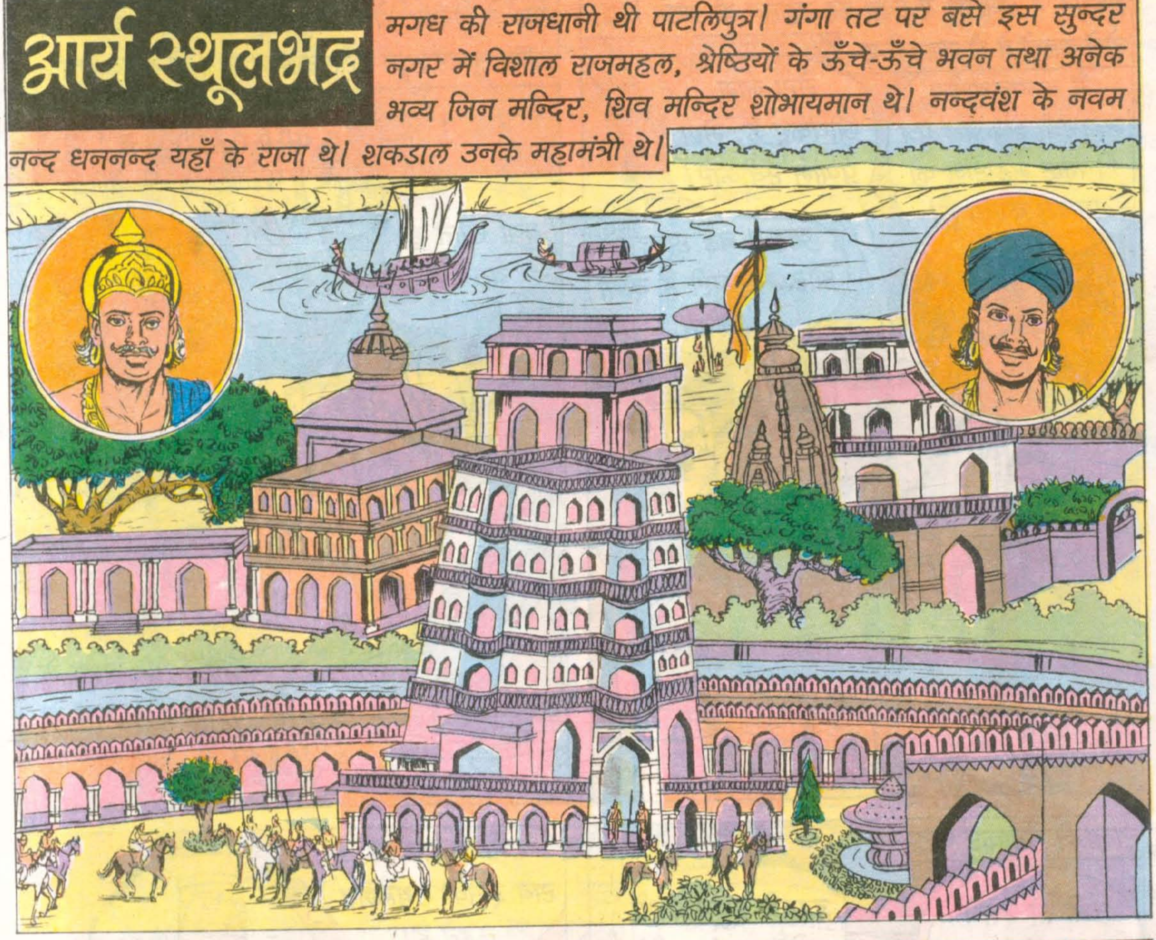
मगध की राजधानी थी पाटलिपुत्र। गंगा तट पर बसे इस सुन्दर नगर में विशाल राजमहल, श्रेष्ठियों के ऊँचे-ऊँचे भवन तथा अनेक भव्य जिन मन्दिर, शिव मन्दिर शोभायमान थे। नन्दवंश के नवम नन्द धननन्द यहाँ के राजा थे। शकडाल उनके महामंत्री थे।

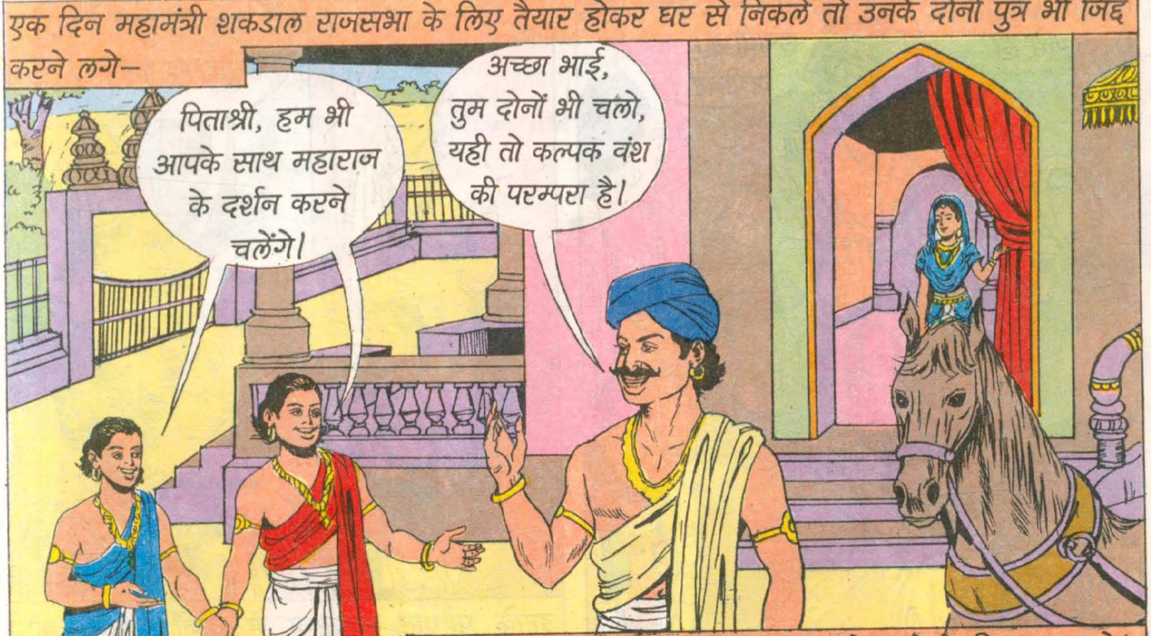
एक दिन महामंत्री शकडाल राजसभा के लिए तैयार होकर घर से निकले तो उनके दोनों पुत्र भी जिद्द करने लगे–
पिताश्री, हम भी आपके साथ महाराज के दर्शन करने चलेंगे।
अच्छा भाई, तुम दोनों भी चलो, यही तो कल्पक वंश की परम्परा है।
दोनों पुत्र शकडाल के साथ राजसभा में जाने के लिए चल पड़े।

शकडाल ने राजसभा में प्रवेश कर महाराज को प्रणाम किया। दोनों बालकों ने भी प्रणाम किया–
मैं कल्पकवंशीय महामंत्री शकडाल पुत्र प्रियंकर महाराज को प्रणाम करता हूँ।
मेरा नाम श्रीयंकर है, मेरा प्रणाम स्वीकारें।
वाह ! बड़े सुन्दर और संस्कारी हैं दोनों बालक।

राजा ने प्रियंकर को पास बुलाकर सिर पर हाथ फिराया। उसका सुन्दर स्थूल शरीर देखकर राजा को मजाक सूझा–
क्या खाते हो वत्स !
माता के हाथ के मोदक।

राजा ने हँसकर कहा–
तभी तो इतने स्थूल (मोटे) हो गये हो।
इसकी स्थूलता भी बड़ी भद्र (अच्छी) लगती है। क्यों मंत्रीवर !

तभी तो घर पर सब इसको स्थूलभद्र कहते हैं।
हम भी तुम्हें स्थूलभद्र कहें?
महाराज की जैसी इच्छा !
इसके पश्चात् महाराज ने दोनों बालकों को अनेक प्रकार के उपहार आदि देकर विदा किया।

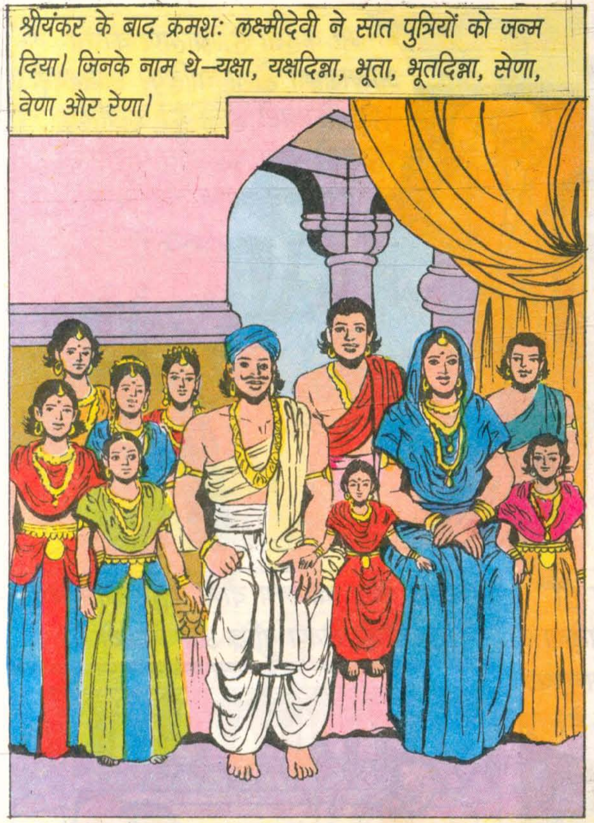
श्रीयंकर के बाद क्रमशः लक्ष्मीदेवी ने सात पुत्रियों को जन्म दिया। जिनके नाम थे–यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा और रेणा।

स्थूलभद्र आठ वर्ष का हुआ। शकडाल ने पत्नी से कहा–
स्थूलभद्र को शिक्षा के लिए तक्षशिला के गुरुकुल भेजना चाहिए। वहाँ अनेक राजाओं के राजकुमार शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
हाँ स्वामी, ऐसी तीव्र बुद्धि वाले बालक को गुरु भी बृहस्पति के समान ही मिलना चाहिए।

शुभमुहूर्त में स्थूलभद्र को अध्ययन के लिए तक्षशिला गुरुकुल में भेजा गया। वहीं पर एक तीक्ष्ण बुद्धि ब्राह्मणकुमार से उसका परिचय हुआ। स्थूलभद्र ने उससे पूछा–
मित्र ! तुम कहाँ से आये हो?
मैं गौल्लभ प्रदेश के चणकपुर के चणी विप्र का पुत्र हूँ। मेरी माँ का नाम है चणकेश्वरी। मेरा नाम है विष्णुगुप्त। किन्तु मुझे सब चाणक्य नाम से ही जानते हैं।

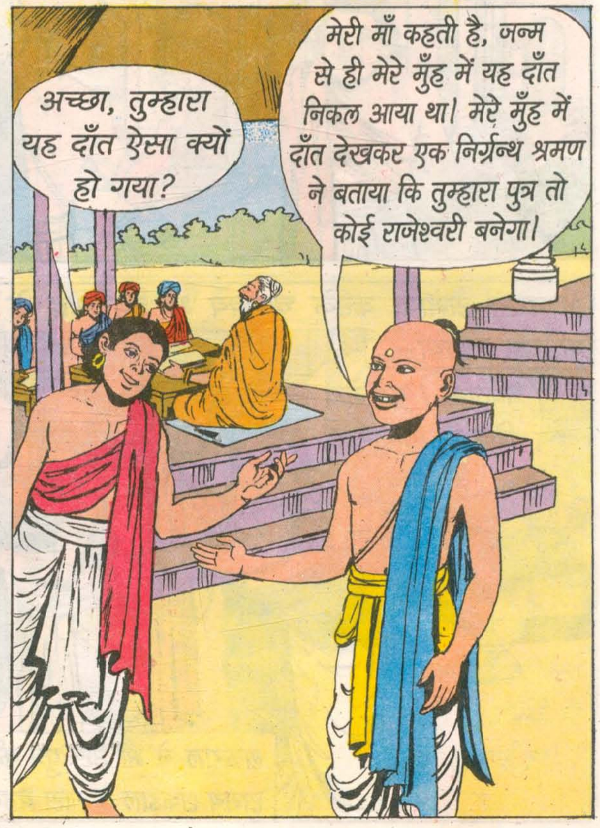
अच्छा, तुम्हारा यह दाँत ऐसा क्यों हो गया?
मेरी माँ कहती है, जन्म से ही मेरे मुँह में यह दाँत निकल आया था। मेरे मुँह में दाँत देखकर एक निर्ग्रन्थ श्रमण ने बताया कि तुम्हारा पुत्र तो कोई राजेश्वरी बनेगा।

तब तो तुम बड़े भाग्यशाली हो।
परन्तु माँ को यह अच्छा नहीं लगा।
क्यों?
माँ कहती है, ब्राह्मण को तो आत्मज्ञानी होना चाहिए। राजेश्वरी नरकेश्वरी होता है। इसलिए उसने मेरा यह दाँत पत्थर से रगड़कर आधा तोड़ दिया।
चलो, ठीक ही किया। अब नरक से तो बचे। फिर हम ब्राह्मणपुत्रों को राजा बनकर क्या करना है? राजमंत्री तो बनेंगे ना?
हाँ, मुझे भी ऐसा ही लगता है। विद्या पढ़ना चाहिए, विद्या ही मनुष्य को महान बनाती है।
स्थूलभद्र और चाणक्य दोनों गहरे मित्र बन गये। दोनों ही तीक्ष्ण बुद्धि और मेधावी थे।
अध्ययन समाप्त करके चाणक्य भी स्थूलभद्र के साथ पाटलिपुत्र आ गया। स्थूलभद्र ने पिता से परिचय कराया–
पिताश्री ! यह मेरा मित्र है, विष्णुगुप्त, चाणक्य।
आयुष्मान् भव वत्स !
शकडाल ने भी उसे पुत्र की भाँति स्नेह किया। चाणक्य कुछ दिन वहीं रहा। रात के समय शकडाल के पास बैठकर दोनों ही राजनीति, धर्मनीति आदि की शिक्षा लेते रहते।

एक दिन चाँदनी रात में दोनों ही मित्र नगर भ्रमण को निकले। एक सुन्दर उद्यान के बीच भव्य भवन को देखकर स्थूलभद्र ने पूछा–
मित्र ! यह विशाल भवन किसका है? इसके बाहर अनेक रथ, अश्व क्यों खड़े हैं?
वाह मित्र ! तुम भी एक ही हो। इस नगर के निवासी होकर भी अपने नगर के कला सौन्दर्य से अपरिचित हो?
मित्र, मुझे इनमें कोई रुचि नहीं है।
हाँ, बस तुम्हें तो अपनी वीणा भली और अशोक वाटिका। बड़े एकान्त प्रिय हो तुम।
मित्र ! मुझे तो एकान्त में ही आनन्द आता है। मेरे रस का स्रोत तो मेरे भीतर से ही प्रकट होता है।
तभी उस भवन में से अनेक श्रेष्ठी आपस में बातें करते हुये बाहर निकलते हैं–
वाह ! क्या अद्भुत कला है? क्या अद्भुत सौन्दर्य है?
हाँ भाई, माँ से भी बढ़कर हैं दोनों पुत्रियाँ।
रूपकोशा जब नृत्य करती है तो ऐसा लगता है आम्रपाली ही जीवंत हो गई हो।

स्थूलभद्र आश्चर्य से देखता है–
मित्र, ये पौरजन किसके विषय में बात कर रहे हैं?
मित्र, कुएँ के मेंढ़क हो तुम। कुछ भी मालूम नहीं तुम्हें, पाटलिपुत्र में क्या-क्या आश्चर्य है?
मुझे क्या लेना-देना है इनसे। परन्तु तुम तो ऐसे कह रहे हो, जैसे सबकुछ जानते हो?
क्यों नहीं, देखो यह राजनर्तकी सुनन्दा का भव्य भवन है। शरद् पूर्णिमा का त्रिदिवसीय उत्सव चल रहा है। उसकी पुत्रियाँ रूपकोशा और चित्रलेखा मगध की सर्वश्रेष्ठ नर्तकियाँ हैं। उन्हीं के विषय में नगर जन चर्चा कर रहे हैं।
स्थूलभद्र (उपेक्षापूर्वक)–
होगा उत्सव ! होगी नर्तकियाँ, हमें क्या मतलब है। कोई नाचे, कोई उछले।
बड़े वीतरागी बने रहते हो तुम प्रियंकर।
भाई राग-द्वेष से तो मन दुःखी ही होता है। वीतरागी ही सुखी रहता है।
स्थूलभद्र की बात सुनकर चाणक्य हँस जाता है। वह सोचने लगा–
इस भरी जवानी में भी इसे संसार का कोई अनुभव नहीं, कोई रस नहीं। कैसा नीरस है यह। युवा होकर नारी सौन्दर्य के प्रति कोई आकर्षण नहीं।
मध्य रात तक नगर भ्रमण करके दोनों अपने भवन में आकर सो गये।

अगले दिन चाणक्य प्रातः उठा और अपने नित्य कर्म व पूजा-पाठ की। तैयार होकर वह भवन से बाहर निकला तो उसकी भेंट महामंत्री शकडाल से हो गई–
पूज्य पिताश्री प्रणाम !
आयुष्मान् भव ! वत्स, आज अकेले ही कैसे?
पिताश्री, प्रियंकर अभी सो रहा है। रात को नगर भ्रमण करके विलम्ब से आये थे।
शरद उत्सव का नृत्य नहीं देखा? कल तो रूपकोशा ने भी बड़ा अद्भुत नृत्य किया बताते हैं।
देखता कैसे? मेरे साथ तो यह वैरागी बंधु था। इसे नृत्य, सौन्दर्य में कोई भी रुचि नहीं है।
शकडाल एकदम गंभीर हो गया। चाणक्य का हाथ पकड़कर एकान्त में ले गया–
इधर आओ वत्स ! तुमसे एक विशेष मंत्रणा करनी है।
स्थूलभद्र अठारह वर्ष का युवक हो गया है। विद्वान् और धर्मज्ञ भी है। परन्तु संसार के विषय में आज भी पाँच वर्ष का बालक है।
पिताश्री, मैं भी कई बार उससे छेड़छाड़ करता हूँ परन्तु पता नहीं वह किस मिट्टी का बना है, नारी का नाम लेते ही तो उसे घृणा हो जाती है।
यही तो चिन्ता का विषय है। यदि यह इसी प्रकार नारी से डरता रहा तो संसार कैसे चलेगा?
तात ! आप तो पिता भी हैं और गुरु भी, आप ही बताइए क्या किया जाय?

नारी का भय दूर करने के लिए नारी का सम्पर्क जरूरी है वत्स।
मैंने सोचा है इसे कुछ दिन रूपकोशा के पास रखा जाए। वह नीति, कला, चतुरता सब में पारंगत है।
चाणक्य हँसा–
तात ! ठीक है–कण्टकेनैव कंटकम्। काँटे से ही काँटा निकलता है। परन्तु कभी-कभी काँटा घाव भी कर देता है।
कुछ देर एकान्त में चाणक्य के साथ बातचीत करके दोनों भवन में आ गये।
प्रातःकाल स्थूलभद्र के साथ नाश्ता करते समय चाणक्य ने कहा–
प्रियंकर ! रात वहाँ जिस नर्तकी का नृत्य हो रहा था। वह कोई सामान्य नर्तकी नहीं है। मगध क्या पूरे पूर्व भारत में उसकी जोड़ी की दूसरी नर्तकी नहीं है। रूपकोशा नाम है उसका।
अच्छा, तुम खूब जानते हो उसे। देखा है उसे?
विद्वान् चर्मचक्षु से नहीं, ज्ञान चक्षु से देखते हैं। रूपकोशा १८ प्रकार के नृत्य और ७ प्रकार के संगीत जानती है। अनेक देशों की भाषा और कला भी। वह आजकल सूचिका नृत्य सीख रही है।
सूचिका नृत्य तो केवल आम्रपाली ही करती थी।

यह उसी की वंशजा तो है। बड़ा अद्भुत नृत्य करती है। आज वह सूचिका नृत्य का प्रथम प्रदर्शन करेगी।
ठीक है, हर कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करता ही है।
क्या तुम भी अपनी वीणा वादन कला का प्रदर्शन नहीं करोगे?
मित्र, कला प्रदर्शन की वस्तु नहीं केवल आनन्द की वस्तु है।
मित्र, आज हम सूचिका नृत्य देखने अवश्य चलेंगे। तैयार रहना।
रात्रि में स्थूलभद्र को साथ लिए चाणक्य कला भवन में प्रवेश करता है। दोनों ही आगे लगे विशिष्ट आसनों पर आकर बैठ गये। थोड़ी देर बाद कलाचार्य कुमार देव खड़े होकर कहते हैं–
महानुभावो ! अब रूपकोशा अपना सूचिका नृत्य प्रस्तुत करेंगी। यह सूचिका नृत्य बड़ा ही अद्भुत और अत्यन्त कठिन साधना है। भारतवर्ष की महान् नर्तकी आम्रपाली के सिवाय आज तक किसी ने इस नृत्य की साधना नहीं की। नृत्य के समय यदि थोड़ी-सी भी चूक हो जाये तो, पाँव से रक्त के फव्वारे छूट जायेंगे। एकाग्रता और शरीर सन्तुलन की श्रेष्ठतम साधना है यह। आप सब शान्त रहें।

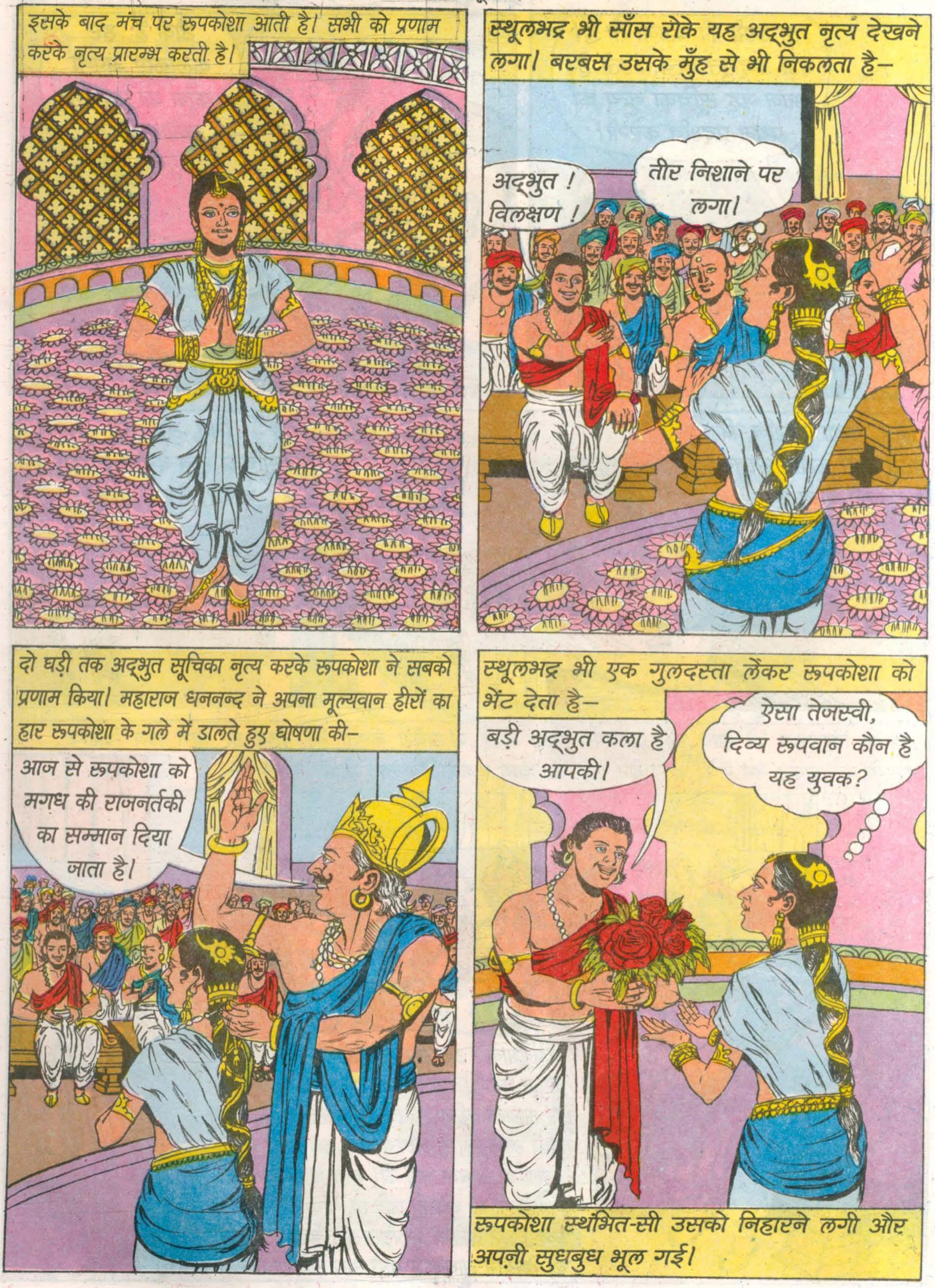
इसके बाद मंच पर रूपकोशा आती है। सभी को प्रणाम करके नृत्य प्रारम्भ करती है।
स्थूलभद्र भी साँस रोके यह अद्भुत नृत्य देखने लगा। बरबस उसके मुँह से भी निकलता है–
अद्भुत ! विलक्षण !
तीर निशाने पर लगा।
दो घड़ी तक अद्भुत सूचिका नृत्य करके रूपकोशा ने सबको प्रणाम किया। महाराज धननन्द ने अपना मूल्यवान हीरों का हार रूपकोशा के गले में डालते हुए घोषणा की–
आज से रूपकोशा को मगध की राजनर्तकी का सम्मान दिया जाता है।
स्थूलभद्र भी एक गुलदस्ता लेकर रूपकोशा को भेंट देता है–
बड़ी अद्भुत कला है आपकी।
ऐसा तेजस्वी, दिव्य रूपवान कौन है यह युवक?
रूपकोशा स्थंभित-सी उसको निहारने लगी और अपनी सुधबुध भूल गई।

तभी चाणक्य उठकर आया–
महामंत्री शकडाल का ज्येष्ठ पुत्र स्थूलभद्र है यह। नृत्यकला में जैसे आप अद्भुत हैं, वीणा वादन में यह भी बेजोड़ है।
अच्छा ! श्रेष्ठ वीणा वादक होकर तुमने आज तक हमारे कानों को तृप्त नहीं किया?
आज इस उत्सव में यह भी हो जाय।
हाँ, हाँ, कृपया अपनी मधुर वीणा की झंकार से सबको आनन्दित कीजिए।
स्थूलभद्र ने वीणा लेकर स्वर छेड़े। लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनने लगे।
वाह ! अद्भुत ! साक्षात् गंधर्व कुमार है यह !
सभी को प्रणाम करके स्थूलभद्र अपने आसन पर आता है। तभी रूपकोशा नजदीक आकर मुस्कराती हुई गुलदस्ता भेंट करके कहती है–
आप महाभाग के दर्शन पुनः क़ब होंगे।
स्थूलभद्र कुछ नहीं बोला अपलक उसे देखता रहा। चाणक्य ने कहा–
शीघ्र ही आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।
और स्थूलभद्र को लेकर वापस आ गया।

घर आकर चाणक्य ने एकान्त में महामंत्री से कहा–
तात ! आपका मनोरथ सफल हो रहा है।
विष्णु, तुम बहुत चतुर और योजना कुशल हो।
धीरे-धीरे स्थूलभद्र और रूपकोशा एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते गये। एक समय ऐसा आ गया कि स्थूलभद्र रात-दिन रूपकोशा के भवन में ही रहने लगा।
रूपकोशा भी स्थूलभद्र के प्रति पूर्णरूप से समर्पित हो गई।
वररुचि
पाटलिपुत्र में आशु कवि था वररुचि। उच्चकोटि का विद्वान् तो था परन्तु अभिमानी और धूर्त भी था। वह प्रतिदिन संस्कृत के १०८ नये श्लोक बनाकर राजा धननन्द की स्तुति करता था। आज भी उसने नव रचित श्लोकों से राजा का मनोरंजन किया। प्रसन्न होकर राजा ने कहा–
सुन्दर ! बहुत सुन्दर !
फिर राजा ने शकडाल की तरफ देखा। शकडाल मौन रहा तो राजा ने सोचा–
महामंत्री शकडाल इस काव्य की प्रशंसा नहीं कर रहे हैं। अवश्य ही यह काव्य पारितोषिक देने योग्य नहीं है।
राजा ने भी आँखें फेर लीं।

वररुचि खाली हाथ निराश लौट आया। उसने अपने मित्र से कहा–
इतने दिन हो गये मुझे नये-नये श्लोक सुनाते, आज तक राजा ने एक स्वर्णमुद्रा भी नहीं दी।
क्यों क्या कारण है?
राजकाज का संचालन शकडाल के हाथ है। जब तक वह प्रशंसा नहीं करता, राजा चाहकर भी एक फूटी कौड़ी नहीं दे सकते।
सुनो मित्र, मैं तुम्हें उपाय बताता हूँ। तुम शकडाल की पत्नी लक्ष्मी को प्रसन्न करो। वह विदुषी भी है और उदार भी।
अगले दिन दोपहर के समय वररुचि सीधा शकडाल के घर पहुँचा और लक्ष्मी को अपने मन की पीड़ा बताते हुए बोला–
बहन ! यदि महामंत्री राजा के समक्ष मेरे काव्य की प्रशंसा कर दें तो मेरी दरिद्रता दूर हो जायेगी।
विप्रवर, मैं एक विद्वान् ब्राह्मण की सहायता करने का प्रयत्न करूँगी।
दूसरे दिन लक्ष्मी ने प्रसंग छेड़ा और कहा–
स्वामी, एक विद्वान् की प्रशंसा करने में आपका क्या जाता है?
यदि मेरे शब्दों से उसका भला होता है तो यही ठीक।
दूसरे दिन वररुचि ने राजसभा में काव्य सुनाये। राजा ने महामंत्री की तरफ देखा। महामंत्री मुस्कराये–
अहो सुभाषितम्।

राजा नन्द भी इसी की प्रतीक्षा करता था। उसने कोषाध्यक्ष को आदेश दिया–
कविवर को एक सौ आठ स्वर्णमुद्रा देकर पुरस्कृत करो।
धन्य हो राजन् !
अब तो प्रतिदिन वररुचि नये-नये श्लोक सुनाकर पुरस्कार में १०८ स्वर्णमुद्राएँ पाने लगा।
एक दिन शकडाल ने सोचा–
यह तो व्यर्थ ही राजकोष का अपव्यय है। इसे रोकना चाहिए।
अगले दिन उसने राजा से पूछा–
महाराज ! वररुचि को यह पुरस्कार किसलिए दिया जा रहा है?
मंत्रिवर ! आपने ही तो प्रशंसा की थी। आपके संकेत के बिना हम थोड़े ही देते।
महाराज ! मैंने काव्य की प्रशंसा की थी, वररुचि की विद्वत्ता की नहीं।
हम समझे नहीं।
महाराज ! वररुचि जो काव्य सुनाता है वह प्राचीन कवि रचित हैं, उसका स्वरचित नहीं।
इसका प्रमाण है आपके पास?
शकडाल ने सहमति से सिर हिलाया।

महामंत्री शकडाल की सातों पुत्रियाँ क्रमशः एक पाठी, द्विपाठी बुद्धि वाली थीं। अर्थात् यक्षा एक बार सुनकर, यक्षदत्ता दो बार सुनकर, भूता तीन बार सुनकर यों सातवीं रेणा सात बार सुनकर कोई भी पाठ याद कर लेती थी। इसलिए यक्षा ने पहली बार सुनते ही उन श्लोकों को दुहरा दिया।

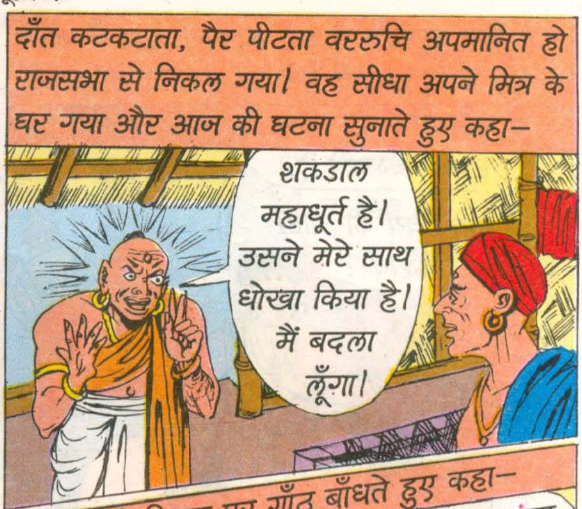

अपमानित होकर वररुचि पाटलिपुत्र छोड़कर चला गया। अनेक प्रदेशों में भ्रमण करता हुआ तीन मास बाद आया और उसने कुछ सहयोगियों को साथ लेकर एक योजना बनाई। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठकर वह गंगातट पर जाकर १०८ श्लोक बोलकर गंगा जी की स्तुति करता। फिर गंगा में से एक नारी हाथ बाहर आता और एक लाल थैली वररुचि के हाथों में फेंक देता। वररुचि लाल थैली को गंगा मैया का कृपा प्रसाद बोलकर ग्रहण करता। उसे खोलता तो उसमें से १०८ स्वर्णमुद्राएँ निकलतीं। लोगों ने यह देखा तो आश्चर्य करने लगे। धीरे-धीरे पाटलिपुत्र में यह खबर फैल गई कि वररुचि को राजा ने स्वर्णमुद्राएँ देना बन्द कर दिया तो क्या हुआ। अब तो उस पर गंगा मैया प्रसन्न हो गई हैं। जो नित्य उसे १०८ स्वर्णमुद्राएँ देने लगी हैं।

राजा धननन्द ने भी यह खबर सुनी। महामंत्री शकडाल से पूछा–'मंत्रिवर, क्या ऐसा हो सकता है? यह सत्य है?'

शकडाल ने दो दिन का समय माँगा। फिर अपने विश्वस्त गुप्तचरों को भेजकर पता लगाया। रात होने पर कुछ गुप्तचर गंगा के किनारे झाड़ियों में छुपकर बैठ गये। मध्य रात्रि के समय एक पुरुष आकृति गंगातट पर आई। वह पानी के बीच गई। थोड़ी देर बाद वापस नदी किनारे पर आकर गंगातट पर बनी वररुचि की कुटिया की तरफ चली गई।

एक गुप्तचर धीरे-धीरे पानी के बीच वहीं पहुँचा। उसने हाथों से इधर-उधर टटोला। एक लकड़ी का यंत्र मिला। उसी पर वह नारी का हाथ लाल चूड़ियाँ पहने बना हुआ था। उसी यंत्र के लकड़ी के डंडों के सहारे वह उस स्थान पर पहुँच गया जहाँ वररुचि खड़ा होकर गंगा स्तुति करता था। वहीं खड़ा होकर उसने पानी में टटोला तो पैरों के बीच एक लकड़ी का यंत्र लगा। उसने यंत्र को ज्योंही पैरों से दबाया तो वह नारी हाथ पानी में से निकला और लाल थैली उछली। थैली सीधी उसके फैले हुए हाथों में आकर गिरी। गुप्तचर को सारा भेद मालूम हो गया। उसने थैली लाकर महामंत्री को दे दी और पूरी जानकारी भी।

महामंत्री ने राजा नन्द से जाकर निवेदन किया–'महाराज ! आप वररुचि द्वारा गंगा स्तुति का दृश्य देखना चाहते हैं तो पधारिए।'

प्रातः सूर्योदय से पहले ही राजा अनेक लोगों को साथ लिए गंगातट पर पहुँच गया। हजारों लोगों की भीड़ एकत्र हो गई। सभी गंगा मैया द्वारा वररुचि को स्वर्णमुद्राएँ देने का अद्भुत दृश्य देखने को उत्सुक थे।

वररुचि गंगातट पर कमर तक पानी में खड़ा होकर हाथ में पुष्प-फल लिए गंगा की स्तुति बोल रहा है–'हर हर गंगे ! जय जय गंगे !'

गंगा स्तुति पूर्ण करके वररुचि ने खड़े-खड़े ही अपने दाहिने पाँव से नीचे का यंत्र दबाया। गंगा की धारा के बीच एक नारी हाथ ऊपर उठा, परन्तु हाथ खाली था।

वररुचि सन्न रह गया–'यह क्या हुआ? स्वर्णमुद्रा से भरी लाल थैली नहीं आई?'

उसने पुनः उच्च स्वर से पुकारा–'गंगा मैया प्रसन्न हो। वर दे ! वर दे ! हर हर गंगे !'

दुबारा खाली हाथ ऊपर आया। बार-बार पुकारने पर भी लाल थैली नहीं आई। महामंत्री शकडाल निकट आता है–'ब्राह्मण पुत्र ! आपकी थैली यह रही। गंगा मैया ने नहीं दी तो कोई बात नहीं। हम आपको दे रहे हैं, लीजिए।'

वररुचि लज्जित होकर नीचे देखता है। शकडाल ने सारा भेद खोलते हुए बताया–'महाराज ! यह थैली गंगा मैया की नहीं, इन्हीं वररुचि की है। रात में वहाँ रख देता है और प्रातः सबके सामने यह नाटक रचता है।'

राजा नन्द ने वररुचि को धिक्कारा–'ब्राह्मण होकर इतना कपट रचने की क्या जरूरत थी। सबकी आँखों में धूल क्यों झोंकी तुमने?'

वररुचि नीचा मुँह किए भीड़ में से कहीं चला गया। जनता उसे धिक्कारती रही–'बड़ा धूर्त, कपटी है यह ! कैसा पाखंडी है।' वररुचि शर्मिंदा होकर नगर से भाग गया।

छह महीनों तक गायब रहकर वररुचि पुनः एक दिन पाटलिपुत्र में आया और बालकों को पढ़ाकर आजीविका करने लगा।

यह शकडाल जो करना चाहता है, उसे राजा नन्द नहीं जान पाता। नन्द को मारकर शकडाल अपने पुत्र श्रीयक को राज-सिंहासन पर बैठाएगा।

नन्द का मन शंकाओं के जहर से भर गया। प्रातः राजसभा में ज्यों ही शकडाल ने आकर प्रणाम किया। नन्द की आँखों से खून बरसने लगा। उसने मुँह फेर लिया। बार-बार तलवार की मूठ पर उसका हाथ जा रहा था। शकडाल भी नगर में फैली अफवाहें सुन चुका था। नन्द के तेवर देखते ही समझ गया–

श्रीयक महाराज धननन्द का विश्वस्त मुख्य अंगरक्षक था।

पिताश्री ! आज्ञा दीजिए, मैं अपने प्राणों को न्यौछावर कर सकता हूँ।
वत्स ! तेरे नहीं, मेरे प्राणों के बलिदान से ही यह अग्नि शान्त होगी। वचन दे ! तू मेरी आज्ञा का पालन करेगा।
शकडाल ने उसका हाथ पकड़कर सारी योजना समझाई–
वत्स ! मेरे एक के बलिदान से ही कुल की रक्षा हो सकती है और राजा के मन का सन्देह मिट सकता है। दूसरा कोई उपाय नहीं है।
नहीं ! नहीं ! मैं ऐसा महापाप नहीं कर सकता।
वत्स ! यह समय भावुकता का नहीं, समझदारी का है। वचन दे, मैं जैसा कहता हूँ वैसा ही तुझे करना पड़ेगा।
श्रीयक ने रोते-रोते अपना हाथ पिता के हाथ पर रखा। सारी योजना पर विचार कर दोनों घर में आ गये।
शकडाल ने रात भर जागकर अपने काम निपटाये। प्रातः उठकर सामायिक-प्रतिक्रमण किया। फिर अरिहंत भगवान को साक्षी मानकर संथारा ग्रहण कर लिया–
हे प्रभो ! मेरे किसी घोर पाप का उदय हुआ है। इसका प्रायश्चित्त मेरे प्राण बलिदान से ही हो सकता है। मैंने जीवन में जो भी जाने-अनजाने पाप किया हो आपकी साक्षी से उसका मिच्छामि दुक्कडं लेता हूँ। प्रभो ! एक आगार के सिवाय जीवन भर के लिए मैं चारों आहार का प्रत्याख्यान करता हूँ।

और वह सीधा राजसभा के लिए चल पड़ा। राजसभा में प्रवेश करते शकडाल ने महाराज धननन्द को प्रणाम करने के लिए सिर झुकाया। पीछे खड़े श्रीयक ने तलवार का प्रहार किया–
हे प्रभु ! मुझे माफ कर देना।
और 'खटाक' पिता की गर्दन उड़ा दी। खून के फव्वारे छूट गये। सभा में हा-हाकार मच गया। राजा नन्द ने उत्तेजित होकर कहा–
श्रीयक ! यह क्या किया तुमने ! अपने निर्दोष पिता की हत्या.....!
श्रीयक ने खून से सनी तलवार राजा के सामने रख दी और बोला–
महाराज ! आपकी दृष्टि में जो राजद्रोही है, वह चाहे पिता हो, मैं उसे जीवित नहीं छोड़ता।
क्या वास्तव में शकडाल राजद्रोही थे?
नहीं, मेरे पिता महान् स्वामिभक्त थे, परन्तु आपने उनकी स्वामिभक्त पर सन्देह किया है, आपने उन्हें राजद्रोही मान लिया, इसीलिए मैंने उनको....!
श्रीयक फूट-फूटकर रोने लगा।

नन्द ने श्रीयक को शान्त किया और पूछा–
सत्य क्या है तुम बता सकते हो?
श्रीयक ने समूची घटना सुनाई–
मेरे विवाह उत्सव पर आपको छत्र आदि भेंट करने के लिए यह सब तैयारी चल रही थी।
घटना की सच्चाई जानकर धननन्द की आँखों में आँसू टपक गये। वे शकडाल के शव के पास खड़े होकर क्षमा माँगने लगे–
ओह ! मैंने वहम में ही एक परम स्वामिभक्त खो दिया। महामंत्री ! तुमने यह क्या करवा दिया, ऐसा स्वामिभक्त मंत्री....।
पास खड़ा श्रीयक अब फूट-फूटकर रो रहा था।
राजा नन्द ने श्रीयक को अपनी छाती से लगाया–
वत्स ! होनहार के हाथों अनर्थ हो गया, अब पूरे राज सम्मान के साथ महामंत्री का अंतिम संस्कार करो।

चम्पा नाम की दूती ने रूपकोशा को सूचित किया–
देवी ! अनर्थ हो गया....।
क्या हो गया?
महामंत्री शकडाल की हत्या....।
दूती सुबक पड़ी।
रूपकोशा की आँखों से भी आँसू टपक पड़े। रोते-रोते उसने स्थूलभद्र को खबर दी–
देव ! पिताश्री नहीं रहे....।
क्या ! कैसे हुआ यह अचानक? क्या अस्वस्थ थे? मुझे खबर तक नहीं पड़ी।
रूपकोशा ने पूरी घटना सुनाई तो स्थूलभद्र नंगे पाँवों चादर लपेटे ही रूपकोशा के भवन से निकल पड़े। कोशा पीछे भागी–
स्वामी ! सुनो, मैं भी आ रही हूँ।
नहीं कोशा ! तुम मत आना।
स्थूलभद्र तेजी से अपने भवन की ओर चल पड़ा।

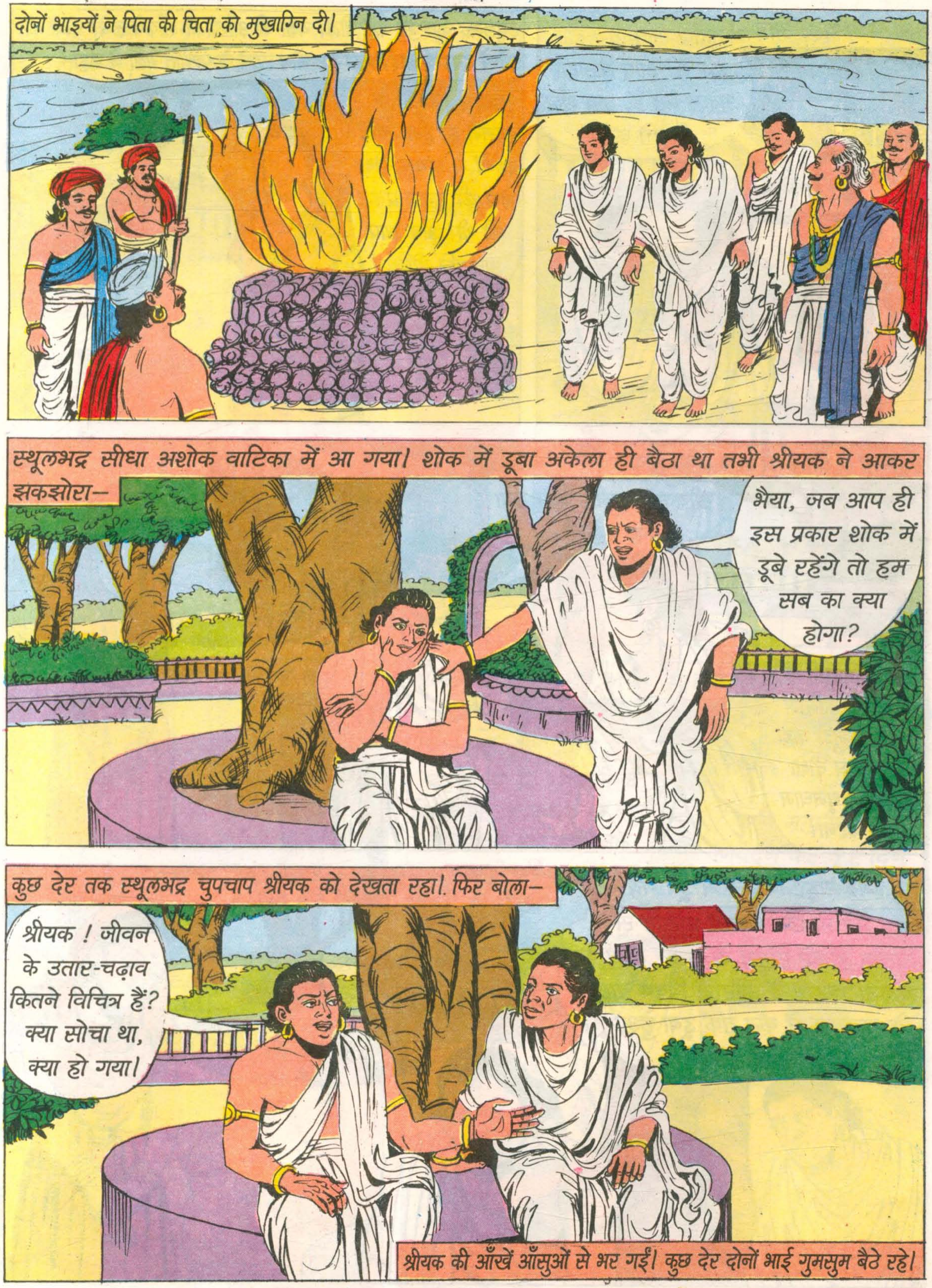
दोनों भाइयों ने पिता की चिता को मुखाग्नि दी।
स्थूलभद्र सीधा अशोक वाटिका में आ गया। शोक में डूबा अकेला ही बैठा था तभी श्रीयक ने आकर झकझोरा—
भैया, जब आप ही इस प्रकार शोक में डूबे रहेंगे तो हम सब का क्या होगा?
कुछ देर तक स्थूलभद्र चुपचाप श्रीयक को देखता रहा। फिर बोला—
श्रीयक ! जीवन के उतार-चढ़ाव कितने विचित्र हैं? क्या सोचा था, क्या हो गया।
श्रीयक की आँखें आँसुओं से भर गईं। कुछ देर दोनों भाई गुमसुम बैठे रहे।

तभी यक्षा वहाँ आई–
तात ! सात दिन बीत चुके हैं। आप निराहार अकेले बैठे हैं, अब शोक निवृत्ति करो।
स्थूलभद्र कुछ भी नहीं बोले। यक्षा की आँखों में झाँकने लगे। दोनों की आँखें डबडबा आईं। कुछ देर मौन रहने के पश्चात् यक्षा ने कहा–
तात ! पिताश्री के सामने ही हम सातों बहनों ने संयम दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की थी। अब आप अनुमति दीजिए।
स्थूलभद्र ने श्रीयक की तरफ संकेत किया–
श्रीयक ! सुनो, यक्षा क्या कह रही है?
तात ! पिताश्री ने ही अपने अन्तिम समय में मुझे कहा था इनका दीक्षा महोत्सव धूमधाम से करना।
स्थूलभद्र गहरे विचारों में डूब गये–
मेरे से छोटी बहनें संसार से विरक्त होकर संयम के कठोर मार्ग पर चलना चाहती हैं और मैं विषय वासना के दलदल में कंठ तक डूबा हुआ हूँ। धिक्कार है मुझे।
!!

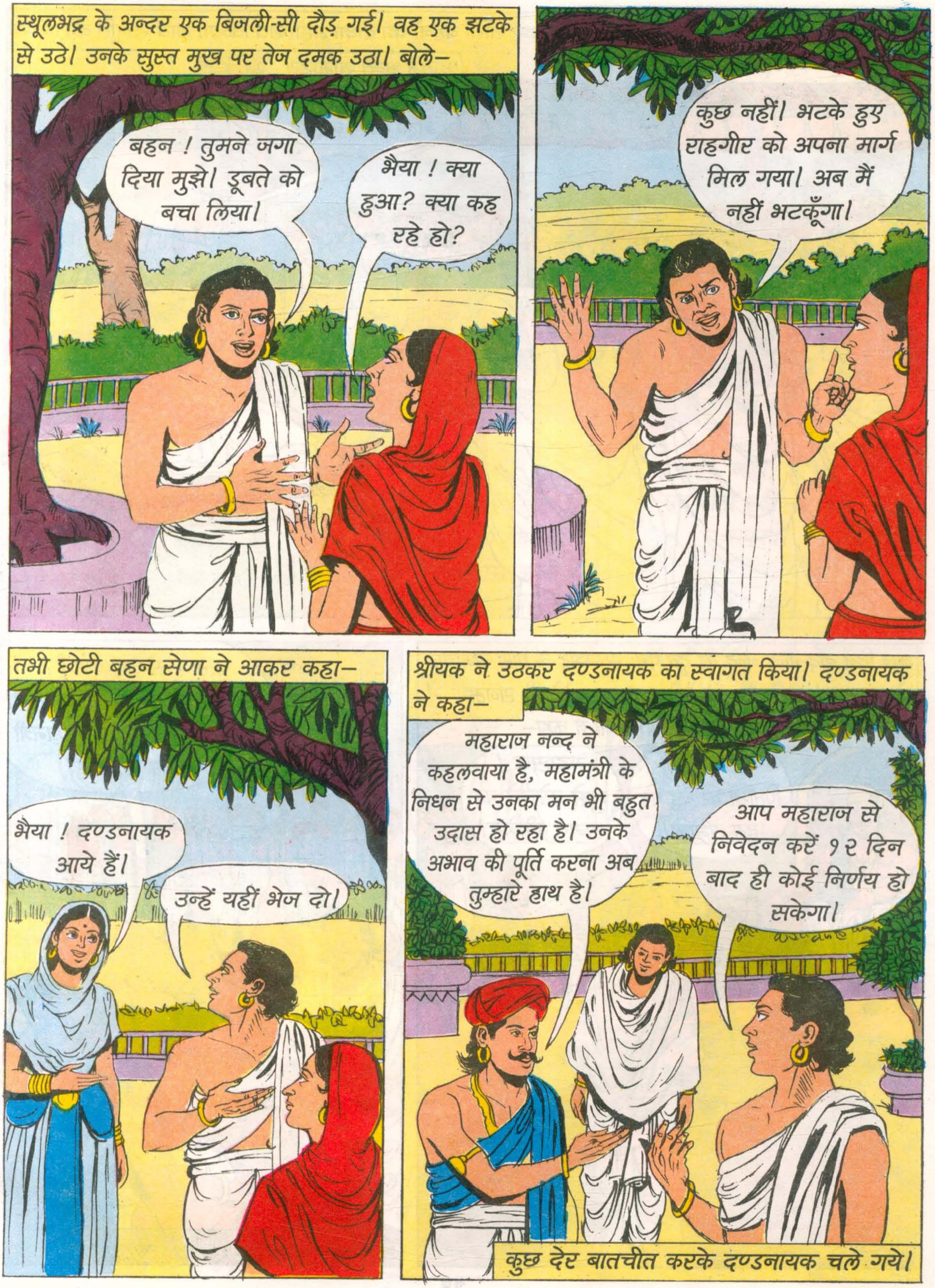
स्थूलभद्र के अन्दर एक बिजली-सी दौड़ गई। वह एक झटके से उठे। उनके सुस्त मुख पर तेज दमक उठा। बोले—
बहन ! तुमने जगा दिया मुझे। डूबते को बचा लिया।
भैया ! क्या हुआ? क्या कह रहे हो?
कुछ नहीं। भटके हुए राहगीर को अपना मार्ग मिल गया। अब मैं नहीं भटकूँगा।
तभी छोटी बहन सेणा ने आकर कहा—
भैया ! दण्डनायक आये हैं।
उन्हें यहीं भेज दो।
श्रीयक ने उठकर दण्डनायक का स्वागत किया। दण्डनायक ने कहा—
महाराज नन्द ने कहलवाया है, महामंत्री के निधन से उनका मन भी बहुत उदास हो रहा है। उनके अभाव की पूर्ति करना अब तुम्हारे हाथ है।
आप महाराज से निवेदन करें १२ दिन बाद ही कोई निर्णय हो सकेगा।
कुछ देर बातचीत करके दण्डनायक चले गये।

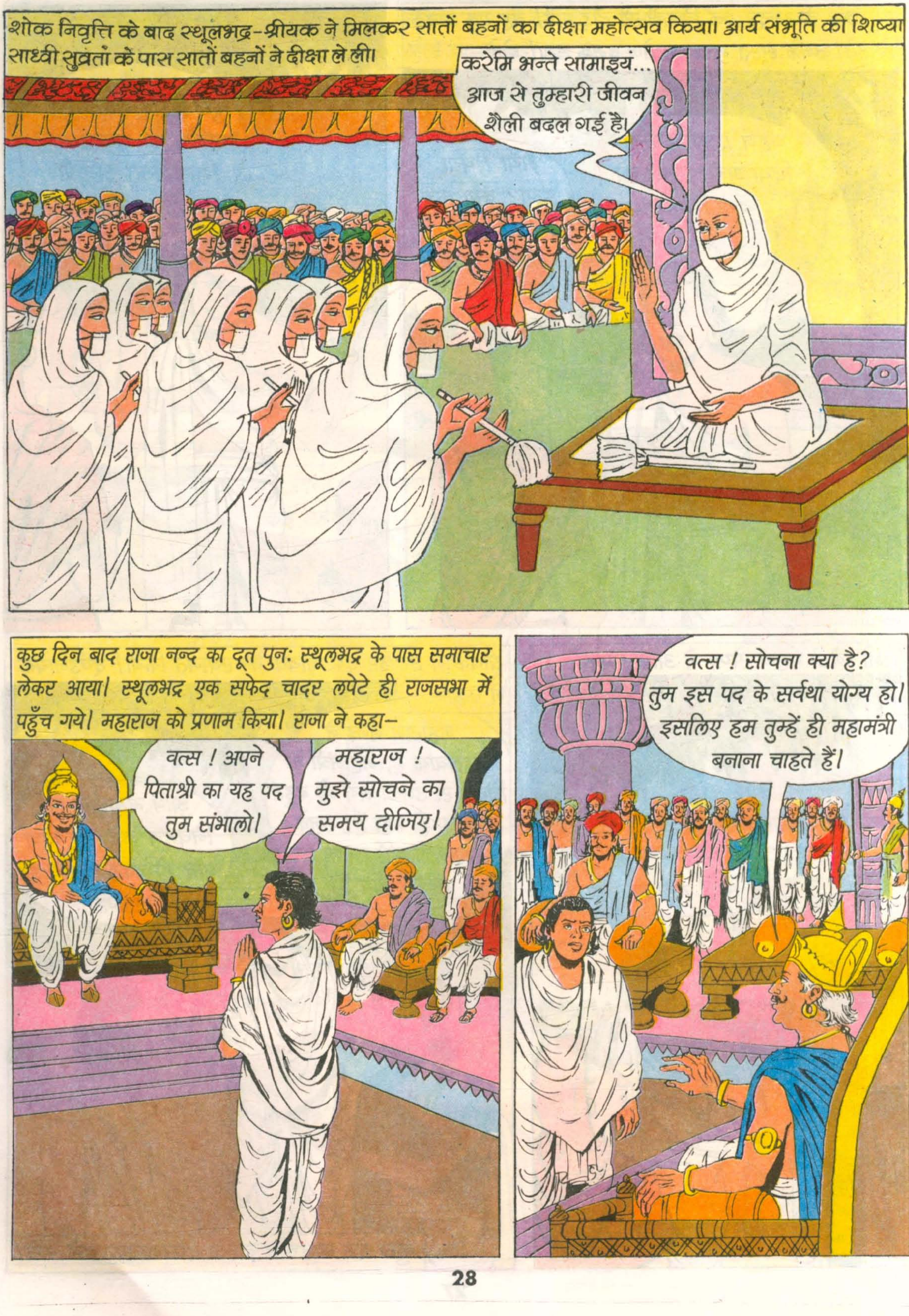
शोक निवृत्ति के बाद स्थूलभद्र-श्रीयक ने मिलकर सातों बहनों का दीक्षा महोत्सव किया। आर्य संभूति की शिष्या साध्वी सुव्रता के पास सातों बहनों ने दीक्षा ले ली।
करेमि भन्ते सामाइयं... आज से तुम्हारी जीवन शैली बदल गई है।
कुछ दिन बाद राजा नन्द का दूत पुनः स्थूलभद्र के पास समाचार लेकर आया। स्थूलभद्र एक सफेद चादर लपेटे ही राजसभा में पहुँच गये। महाराज को प्रणाम किया। राजा ने कहा–
वत्स ! अपने पिताश्री का यह पद तुम संभालो।
महाराज ! मुझे सोचने का समय दीजिए।
वत्स ! सोचना क्या है? तुम इस पद के सर्वथा योग्य हो। इसलिए हम तुम्हें ही महामंत्री बनाना चाहते हैं।

स्थूलभद्र के सामने पिता की मृत्यु की घटना सजीव हो उठी—
उसका शरीर काँप उठा।
वह सोचने लगा—
जिस पद ने मेरे निर्दोष पिता की जान ली। क्या मैं उसी पद को स्वीकार कर लूँ।
फिर सोचता है—
यह पद कितना ही गौरवास्पद हो। आखिर तो राजा का सेवक ही होता है मंत्री। सेवक कभी अपनी इच्छा से नहीं जी सकता।
नहीं, नहीं, मैं यह पद नहीं स्वीकार कर सकता।
काफी देर विचारों में खोये रहने के पश्चात् उसने निर्णायक स्वर में राजा से कहा—
हाँ, हम भी तो यही चाहते हैं।
महाराज ! क्षमा करें। मैंने बहुत सोच विचार किया है, मैं अपने पुत्र-धर्म का पालन करूँगा।

राजा राजपुरोहित की ओर मुड़कर बोले–
पुरोहित जी ! मंत्री पद प्रदान का शुभ मूहूर्त्त देखिए।
स्थूलभद्र ने हाथ जोड़कर कहा–
महाराज ! पहले मेरी बात को समझ लें।
तुम क्या कहना चाहते हो?
मेरे पिताश्री की इच्छा थी, ''पुत्र ! तुम मेरे से भी महान् बनना।'' इसलिए मैं अपने पिता से भी महान् बनना चाहता हूँ।
हमें विश्वास है तुम्हारे जैसा योग्य पुत्र पिता से बढ़कर ही होगा।
महाराज ! राजनीति में मैं उनसे बढ़कर कतई नहीं हो सकता। मेरी महानता का मार्ग है–संसार त्यागकर संयम ग्रहण करना।
क्या?
यह सुनकर राजा धननन्द स्तम्भित हो गये।

सारी सभा चकित होकर स्थूलभद्र की ओर देखने लगी–
क्या कह रहे हो? संयम ! संसार त्याग !
हाँ महाराज ! मैंने निर्णय कर लिया है। संसार की वास्तविकता समझ ली है। अब मैं अपना स्वामी स्वयं बनूँगा। मैं संसार त्यागकर दीक्षा लूँगा।
कुछ सभासद आपस में कानाफूसी करते हैं–
देख लेना यह संयम के बहाने वापस कोशा के पास ही जायेगा। ऐसा रसिया, कामी पुरुष साधु बनेगा? असंभव !
राजा नन्द को भी विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने कहा–
वत्स ! शोक में ऐसी भावुकता स्वाभाविक है। तुम गंभीरता से सोचो। तुम्हें साधु नहीं, मंत्री बनना है।
महाराज ! मेरा निर्णय अटल है। मैं आर्य संभूति विजय का शिष्य बनूँगा।
भैया ! यह क्या कह रहे हो? ऐसा मत करो। हमें छोड़कर मत जाओ।

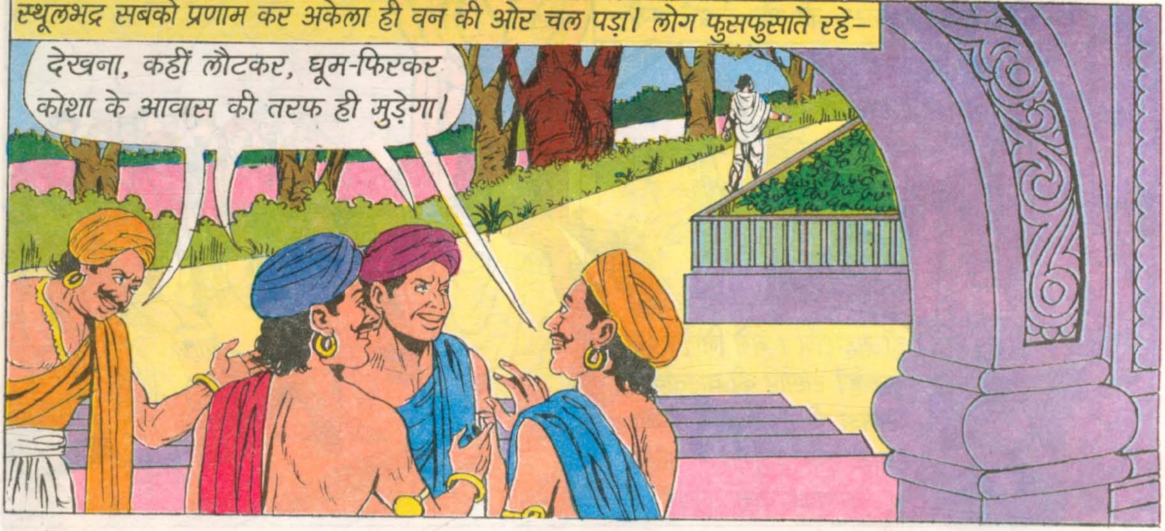
स्थूलभद्र सबको प्रणाम कर अकेला ही वन की ओर चल पड़ा। लोग फुसफुसाते रहे–
देखना, कहीं लौटकर, घूम-फिरकर कोशा के आवास की तरफ ही मुड़ेगा।

उपवन में विराजमान आर्य संभूति के पास पहुँचकर स्थूलभद्र ने प्रार्थना की–
गुरुदेव! मैं संसार से विरक्त हो गया हूँ। मुझे अपना शिष्य बनाइए।
भद्र! दृढ़ संकल्प के साथ आओ। स्वागत है.....

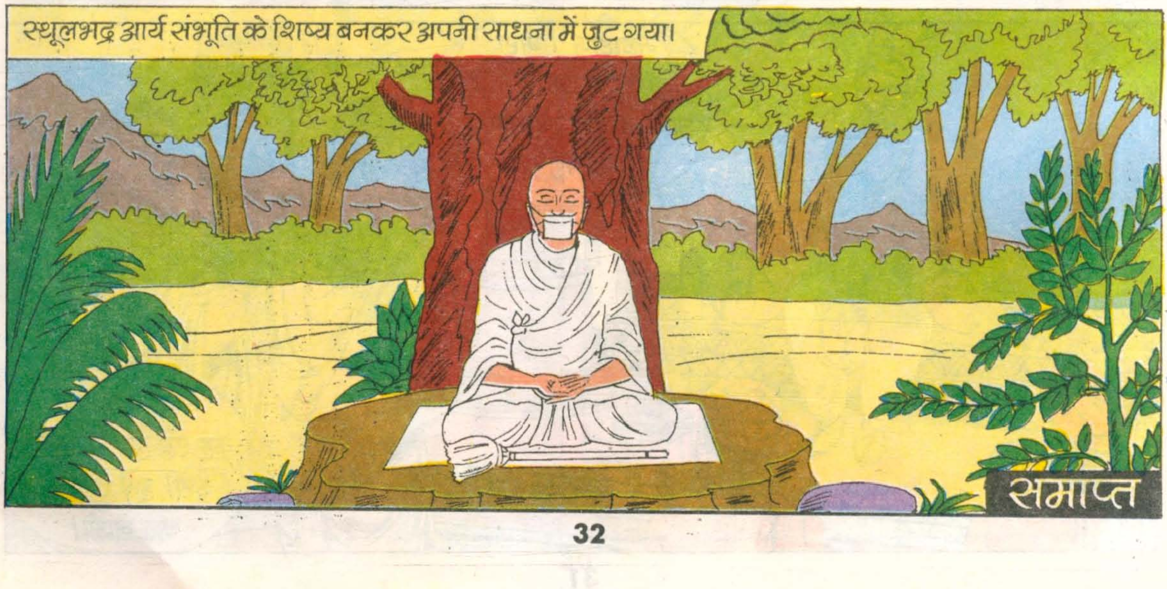
स्थूलभद्र आर्य संभूति के शिष्य बनकर अपनी साधना में जुट गया।
समाप्त

भगवान पार्श्वनाथ के प्रगट प्रभावक, असीम आस्थारूप, श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की पावन अनुभूति करानेवाला, पोजीटीव एनर्जी के पावरहाउस समान, दिव्य और नव्य

पावनता का प्रतीक - पारसधाम.

- महानगरी मुंबई के हृदय समान घाटकोपर में **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** प्रेरित ज्ञान, ध्यान और साधना का एक अनोखा आधुनिक तकनीकी द्वारा तैयार किया गया धाम... पारसधाम..!
- पारसधाम... एक ऐसा धाम, जहाँ परमात्मा पार्श्वनाथ के दिव्य परमाणु और पूज्य गुरुदेव की अखंड साधना शक्ति के अध्यात्मिक Vibrations प्रतिपल प्रेरणा के साथ परम आनंद और परम शांति की अनुभूति कराता है ।
- यहाँ मानवता की सपाटी से अध्यात्म के मोती तक की गहराई मिलती है ।
- यहाँ है महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की प्रभावक सिद्धीपीठिका जो मनवांछित फल देती है..!
- यहाँ है ऐसी कक्षाएं जहाँ Look n Learn के बच्चे अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करते हैं ।
- यहाँ है अध्यात्म ध्यान साधना की शक्ति का प्रतीकरूप पीरामीड साधना केन्द्र ।
- यहाँ है शांतिपूर्ण विशाल प्रवचन कक्ष जहाँ संतो के एक एक शब्द अंतर को स्पर्श करते हैं ।
- यहाँ है स्पीरीच्युअल शोप जहाँ उपलब्ध है अध्यात्म ज्ञान, साधना और प्रवचन आदि की पुस्तकें और C.D., V.C.D.
- यहाँ है एक अति आकर्षक आर्ट गैलेरी जहाँ आगम के रंगीन चित्रों की प्रदर्शनी आपके दर्शन को शुद्ध कर देगी ।

महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथ परमात्मा की स्तुति के अखंड आराधक **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** की साधना के तरंगो से समृद्ध पारसधाम अध्यात्म की आत्मिक अनुभूति करानेवाला आधुनिक धाम है जो जैन समाज की उन्नति और प्रगति के लिए एक अनोखी मिसाल है ।

यहाँ के नीति और नियम भी अपने आपमें विशेष महत्त्व रखते हैं ।

यहाँ आनेवाली व्यक्ति को गुरुदर्शन और गुरुवाणी के लिए प्रथम 10 मिनिट ध्यान कक्ष में ध्यान साधना करके अपने मन और विचारों को शांत करना जरूरी है । तभी गुरुवाणी अंतरमे उतरेगी...!

मौन, शांति और अनुशासन यहाँ के मुख्य नियम हैं । यहाँ आनेवाले भक्तों का अनुशासन ही उनकी अलग पहचान है ।

पारस के धाम में पारस बनने के लिए आईए पारसधाम..!

PARASDHAM

Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा. की प्रेरणा से प्रकाशित

JAIN EDUCATION BOARD

आगम आधारित हिन्दी Comics

प्रत्येक Comics अपनी एक मौलिक विशेषता के साथ प्रकाशित की जाती है।

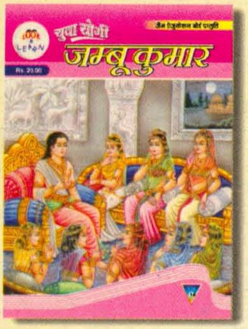

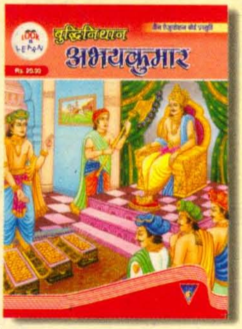

बच्चों के प्यारे गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.ने देखा कि आज के बच्चों को Comics पढ़ने में ज्यादा रूचि है । Comics हाथ में आते ही खाना पीना भी भूल जाते हैं और एक ही बार में, पूरी पुस्तक पढ़ लेते हैं ।

यह देखकर बाल मनोविज्ञान के अभ्यासी पू. गुरुदेव ने सोचा अगर भगवान महावीर के आगम शास्त्र में जो दृष्टांत, सत्य घटना हैं उसे अगर Comics के रूप में प्रकाशित करें तो बच्चों को सहजता से जैनधर्म के आदर्श और वीर पात्रों के बारे में भी जानकारी मिल जायेगी । ऐसी उत्तम भावना से उन्होंने अब तक 30 Comics प्रकाशित करवाई हैं और इनकी सफलता देखकर और अनेक ऐसी Comics की पुस्तकें प्रकाशित करने के भाव हैं।

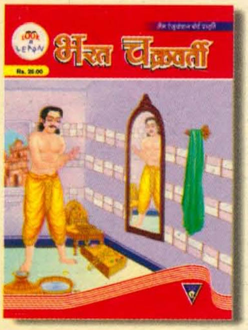

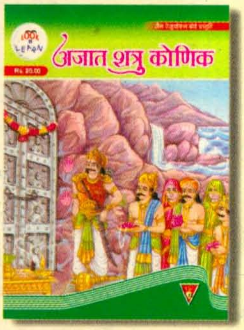

आगम के श्रेष्ठ पात्रों को बच्चों तक पहुँचाने का श्रेष्ठत्तम माध्यम है यह सचित्र साहित्य।

50 रूपये वाली ये सचित्र Comics दाताओ के अनुदान से और ज्ञान प्रसार के भाव से आप मात्र 20 रूपये में प्राप्त कर सकतें हैं ।

शासन प्रभावक पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा. की प्रेरणा से
लुक अेन लर्न जैन एज्युकेशन बोर्ड प्रस्तुत करता है निम्नलिखित सचित्र साहित्य..!

- बुद्धिनिधान अभयकुमार
- अजात शत्रु कोणिक
- भरत चक्रवर्ती
- पाँच रत्न
- क्षमादान
- युवा योगी जम्बू कुमार
- करनी का फल
- राजकुमार श्रेणिक
- रूप का गर्व
- वचन का तीर
- तृष्णा का जाल
- पिंजरे का पंछी
- महासती अंजनासुन्दरी
- महासती मदन रेखा
- धरती पर स्वर्ग
- सुर सुन्दरी
- भगवान मल्लीनाथ
- नन्द मणिकार
- उदयन वासवदत्ता
- कर भला हो भला
- शकडाल पुत्र
- राजकुमारी चन्दनबाला
- करकण्डू जाग गया
- महाबल मलया सुन्दरी
- किस्मत का धनी धन्ना
- भगवान ऋषभदेव
- भगवान महावीर की बोध कथाएँ
- राजा प्रदेशी और केशीकुमार श्रमण
- आर्य स्थूलभद्र
- ऋषिदत्ता

पत्रिका मंगवाने के लिए सदस्यता शुल्क अर्हम युवा ग्रुप के नाम से चेक / ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेजे ।

LOOK N LEARN : PARASDHAM, TEL. : 022-32043232
Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077.